एस.सीदुबे

S. C Dube

प्रोफेसर श्याम चरण दुबे का जन्म 25 जुलाई 1922 में मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ के एक गांव में हुआ था ।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के ऐसे प्राथमिक विद्यालय में हुई ।जहां विद्यार्थियों को टाटपट्टी पर बैठाकर पढ़ाना होता था ।श्याम चरण दुबे की आयु जब केवल 7 ,8 वर्ष की थी तभी उनकी माता का देव आसन हो गया था ।

श्याम चरण दुबे जब कमार जनजाति पर शोध कार्य कर रहे थे इनकी वैवाहिक जीवन 50 वर्ष की इतनी सुखद रहा कि कभी किसी ने

उन्हें एक दूसरे की प्रशंसा के अतिरिक्त किसी अन्य रूप में नहीं देखा ।

5 जनवरी 1996 को दिल का दौरा पड़ने के बाद डॉ श्याम चरण दुबे अस्पताल में भर्ती हुए लेकिन जिंदगी को सदैव रचनात्मक के साथ जीने की कामना करने वाले प्रोफेसर दुबे का अपनी पत्नी की उपस्थिति में उनसे बात करते-करते मृत्यु हो गया ।

दुबे के कार्य--

एस सी दुबे ने अगले 30 वर्षों में जनजाति, ग्रामीण जीवन ,सामुदायिक विकास और आधुनिकीकरण परिवर्तन प्रबंधन और

परंपरा और विकास सहित विभिन्न विषयों पर योगदान दिया है ।

दुबे की प्रमुख कृतियां--

(1) कमर, भारती गांव (1955)

(2) भारत के बदले गांव (1958)

(3)सामुदायिक विकास के लिए संस्था निर्माण (1968)

(4) समकालीन भारत और इसका आधुनिकीकरण (1974)

(5) भारत का जनजातीय विरासत (1977)

(6) परंपरा और विकास (1990)

भारतीय ग्राम

(Indian village)--

डॉ एस सी दुबे का समाजशास्त्र के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान ग्रामीण व्यवस्था का संरचनात्मक प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक एक भारतीय ग्राम (An Indian village) में प्रस्तुत किया है आंध्र प्रदेश के हैदराबाद में स्थित शमीरपेट गांव पर आधारित है । तेलंगाना क्षेत्र अपनी उपजाऊ भूमि तालाबों झीलों और धार्मिक धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है । यह गांव लगभग 350 वर्ष प्राचीन है ।आसपास के ग्रामीणों से इस गांव के लोगों के संबंध काफी घनिष्ठ हैं तथा मृत्यु , जन्म ,विवाह और

विभिन्न अनुष्ठानों के अवसरों पर शमीरपेट से लगे हुए गांव के लोग एक दूसरे से सहभाग करते रहते हैं ।

शमीरपेट की सामाजिक संरचना

(social structure of Shamirpet)-

यहां की सामाजिक संरचना ब्राह्मण ,क्षत्रिय ,वैश्य, शूद्र जैसे चार वर्णों में विभाजित हैं । परंपरागत रूप से गांव में सभी जातियों में अंतर विवाहित समूह पाया जाता है ।एक - एक जाति भी अनेक उप जातियों में विभाजित हैं ।

लेकिन सकली और मंगली जाति के लोगों के बीच रोटी बेटी के संबंध नहीं पाए जाते हैं । इस गांव की पारिवारिक संरचना पितृसत्तात्मक तथा पित्त वंशीय है । परंपरागत रूप से गांव में संयुक्त परिवारों का प्रचलन है ।

संगठनात्मक तथा न्यायिक संरचना

(organisational and judical structure)

संगठनात्मक आधार पर शमीरपेट गांव में सबसे ऊंचा पद मुखिया का होता है । जिसे देशमुख कहा जाता है । देशमुख गांव की पंचायत का प्रमुख होता है तथा उसका पद अनुवांशिक है । पंचायतों का कार्य भी जाति की रीति-रिवाजों

और नियमों को तोड़ने से संबंधित व्यक्तियों को दंडित करना होता है ।

गांव में किसी तरह की संक्रामक बीमारी की आशंका होने पर परंपरागत विधि से उसके समाधान के लिए विभिन्न आयोजनों की व्यवस्था की जाती है ।

शमीरपेट गांव की धार्मिक संरचना

(religious structures of Shamirpet)

ग्रामीण धर्म वास्तव में एक व्यवहारिक धर्म है । जिसमें अनेक विश्वासों भावनाओं रीति-रिवाजों और कर्मकांड का समावेश होता है ।यह धर्म एक और अनेक पौराणिक ,कहावतें ,धार्मिक

उपदेशों और लोक़ रीति-रिवाजों से संबंधित है । इसमें प्रेत आत्माओं और जादुई विश्वासों का भी समावेश होता है । शमीरपेट मुख्यता एक हिंदू गांव है लेकिन यहां सुन्नी मुसलमान भी काफी संख्या में रहते हैं ।

शमीरपेट गांव की आर्थिक संरचना

(economic structure of Shamirpet)

गांव में प्रमुख जाति समूहों के मुख्य आर्थिक कार्य और गतिविधियां पारंपरिक रूप से निर्दिष्ट हैं । कृषि ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय है । वह अपनी आजीविका के लिए मवेशी और घरेलू पशुओं को भी पालते हैं ।

उदाहरण के लिए गाय और भैंस को दूध के लिए रखा जाता है । शिकार मछली पकड़ना फलों का संग्रह औषधि जड़ी बूटियां जड़े कंद और छाले अन्य व्यवसाय है ।